श्री हरि चालीसा

परम पूज्य सदगुरुदेव

श्री स्वामी गीतानन्द जी महाराज ''भिक्षुः''

ॐ नमः हरि ॐ नमः ॐ नमः हरि ॐ नमः ॐ नमः हरि ॐ नमः ॐ नमः हरि ॐ नमः ॐ नमः हरि ॐ नमः ॐ नमः हरि ॐ नमः ॐ नमः हरि ॐ नमः

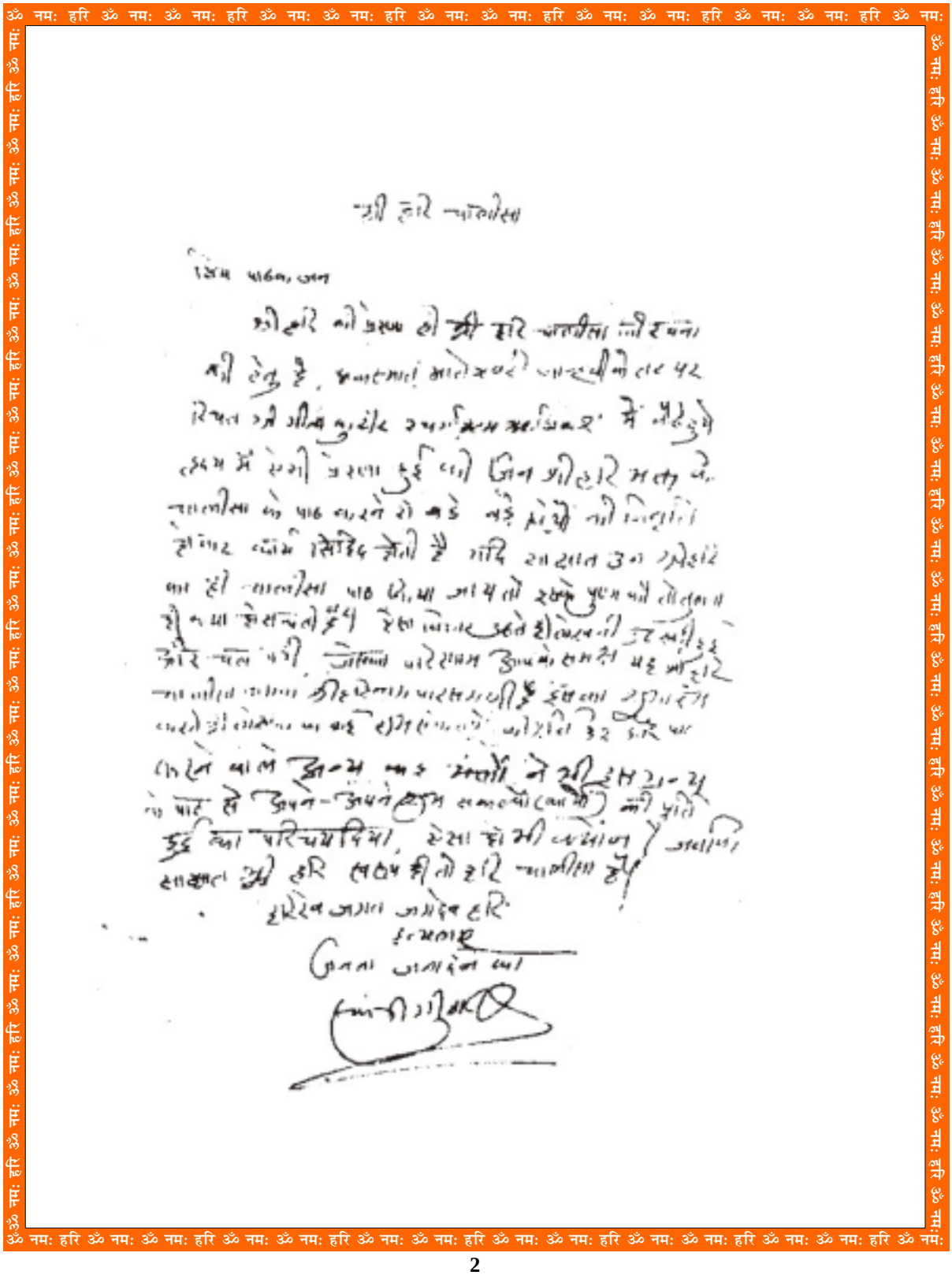

ॐ नमः हरि ॐ नमः ॐ नमः हरि ॐ नमः ॐ नमः हरि ॐ नमः ॐ नमः हरि ॐ नमः ॐ नमः हरि ॐ नमः ॐ नमः हरि ॐ नमः ॐ नमः हरि ॐ नमः

श्री हरि चालीसा

प्रिय पाठक जन,

श्री हरि की प्रेरणा ही श्री हरि चालीसा की रचना की हेतु है, अकस्मात् मातेश्वरी जाहनवी के तट पर स्थित श्री गीता कुटीर स्वर्गाश्रम ऋषिकेश मे बैठे हुए हृदय में ऐसी प्रेरणा हुई की जिन श्री हरि भक्त के चालीसा के पाठ करने से बड़े-बड़े विघ्नों की निवृति होकर कार्य सिद्धि होती है यदि साक्षात उन श्री हरि का ही चालीसा पाठ किया जाए तो इसके पुण्य की तो तुलना ही क्या हो सकती है। ऐसा विचार उठते ही लेखनी उठ खड़ी हुई और चल पड़ी। जिसका परिणाम आपके समक्ष ये श्री हरि चालीसा नामक श्री हरि नाम पारसमणि है। इसका शुभारंभ करते ही लेखक के कई शुभ संकल्प की पूर्ति हुई और पाठ करने वाले कई अन्य भक्तों ने भी इस पाठ से अपने अपने शुभ संकल्पों (कार्यों) की पूर्ति हुई का परिचय दिया। ऐसा हो भी क्यों न? जबकि साक्षात श्री हरि स्वरूप ही तो हरि चालीसा है।

हरिदेव जगत जगदेव हरि

इत्यलम्

जनता जनार्दन का

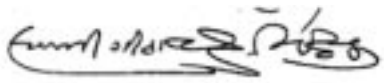

श्री हरि चालीसा

रचयिता

पूज्यचरण सद्गुरुदेव

श्री स्वामी गीतानन्द जी महाराज 'भिक्षुः'

नमः श्री हरये

हरि नाम महिमा

हरिर्हरति पापानि, दुष्ट-चित्तैरपि स्मृतः।
अनिच्छयापि संस्पृष्टो, दहत्येव हि पावकः॥

भावार्थः

जैसे इच्छा अनिच्छा से, सावधानी या असावधानी से अग्नि का स्पर्श हो जाने से जला देती है, क्योंकि जलाना उसका स्वभाव है, वैसे ही श्री हरि नाम चाहे श्रद्धा प्रेम से उच्चारण करें या अनिच्छा से उच्चारण हो जाये, अथवा किसी के उच्चारण करने से कानों में पड़ जाये तो भी वह पापों को भस्म कर देता है क्योंकि पापों को हरण करना हरि नाम का स्वभाव है, वस्तु की स्वाभाविक शक्ति इस बात की प्रतीक्षा नहीं करती कि यह मुझ पर श्रद्धा विश्वास रखता है या नहीं, वह तो अपने स्वभावानुसार ही बर्तती है जैसे अग्निविषामृतादि। अग्नि का स्वभाव है जला देना, विष का स्वभाव है मार देना, अमृत का स्वभाव है अमर कर देना, इसी प्रकार हरि नाम का स्वभाव है पापों का हरण कर लेना। भगवान का नाम केवल पापों का नाश ही नहीं करता अपितु मोक्ष का साधन भी है।

श्री हरि चालीसा

दोहा

वन्दउं सद्गुरु के युगल, चरण कमल धरि शीश।
कृपा करहु मति भ्रम हरहु, देह सुखद आशीष॥

श्री हरि हिय धारण करहुँ, सुमिरौं सिद्ध गणेश।
पाठ करहुँ हरि चालीसा, कृपा करहु अखिलेश॥

हरि का नाम जपो रे भाई,
हरि का नाम बड़ा सुखदाई॥१॥

हरि का नाम सकल दुःख नाशक।
हरि का नाम है ज्ञान प्रकाशक॥२॥

हरि का नाम जपत दुःख जावे,
हरि का नाम जपत सुख पावे॥३॥

हरि का नाम लेत जो जागे,
हरि का नाम सुनत दुःख भागे॥४॥

हरि का नाम करो स्नान,
हरि का नाम करो जल पान॥५॥

हरि का नाम तीर्थ शुभ जानो,
हरि का नाम महामन्त्र मानो॥६॥

हरि का नाम ही भूषण धारो,
हरि का नाम सदा रखवारो॥७॥
हरि का नाम ही पारस जानो,
हरि का नाम रत्न मणि मानो॥८॥
हरि का नाम अखिल अघ-हर्ता,
हरि का नाम विमल मन कर्ता॥९॥
हरि का नाम हरे दुःख सारा,
हरि का नाम करे भव पारा॥१०॥
हरि का नाम त्रिताप नशावे,
हरि का नाम सुबुद्धि बनावे॥११॥
हरि का नाम हरे अज्ञाना,
हरि का नाम करे कल्याणा॥१२॥
हरि का नाम हृदय हर्षावे,
हरि का नाम पवित्र बनावे॥१३॥
हरि का नाम रोग सब नाशे,
हरि का नाम रहे नित पासे॥१४॥
हरि का नाम जपो दिन राती,
हरि का नाम है संग संघाती॥१५॥

हरि का नाम हृदय में ध्यावो,
हरि का नाम न पल विसरावो॥१६॥
हरि का नाम सकल जग तारे,
हरि का नाम ही जन्म सँवारे॥१७॥
हरि का नाम जपो मेरे मीता,
हरि का नाम भागवत गीता॥१८॥
हरि का नाम वेद श्रुति गावें,
हरि का नाम देव मुनि ध्यावें॥१९॥
हरि का नाम सदा सुखकारी,
हरि का नाम अमंगल हारी॥२०॥
हरि का नाम त्रिविध दुःख हर्ता,
अजर अमर मन निर्भय कर्ता॥२१॥
हरि का नाम विघ्न सब नाशे,
हृदय मध्य शुभ ज्ञान प्रकाशे॥२२॥
हरि का नाम सदा सुख दायक,
नित्य निरन्तर संग सहायक॥२३॥
हरि का नाम अनन्त अनादी,
गावहिं मुनि परमारथ वादी॥२४॥

हरि का नाम सुखद सब भाँती,
नाम जपत हो शीतल छाती॥२५॥
हरि का नाम जपत अघ जाई,
लोक सुखी परलोक सहाई॥२६॥
हरि का नाम हृदय बस जावे,
दुःख दरिद्रता दूर भगावे॥२७॥
हरि का नाम बसे मन जाके,
शोक मोह सन्ताप न ताके॥२८॥
हरि का नाम जपत दुःख जाई,
भानु उदय जिमि तिमिर नशाई॥२९॥
हरि का नाम जो सुख में गावे,
दुःख दरिद्रता पास न आवे॥३०॥
हरि का नाम जो दुःख में ध्यावे,
ता को दुःख संकट कट जावे॥३१॥
हरि का नाम जपे जो प्राणी,
मन पवित्र हो निर्मल वाणी॥३२॥
हरि का नाम जपे जो कोई,
जन्म-मरण नहीं ता को होई॥३३॥

हरि का नाम जो निश दिन गावे,

सो सुख शान्ति परम पद पावे॥३४॥

हरि का नाम जपो अति प्रीति,

नाम जपत जावे भव भीती॥३५॥

हरि का नाम जपो मन मेरे,

कट जावें सब संकट तेरे॥३६॥

हरि का नाम निरन्तर गावो,

देश काल प्रतिबन्ध न लावो॥३७॥

हरि अनन्त हरि नाम अनन्ता,

गावहिं बुध नहिं पावहिं अन्ता॥३८॥

जो हरि नाम चालीसा गावे,

जन्म मरण बन्धन कट जावे॥३९॥

'भिक्षु' करें क्या नाम बड़ाई,

नाम की महिमा कही न जाई॥४०॥

दोहे

सन्त ग्रन्थ सब जगत के,
ढूंढ निकाले सार।
हरि का नाम जहाज है,
जो जावे भव पार॥१॥
हरि का सुमिरन जो करे,
हरि चरणों में प्रीत।
श्री हरि हिय धारण करे,
मिट जावे भव भीत॥२॥
हरि व्यापक सर्वज्ञ प्रभु,
हरि सबकी सुधि लेत।
जा की जैसी भावना,
तैसो ही फल देत॥३॥
अन्त समय हरि नाम ले,
करे देह का त्याग।
जन्म मरण से मुक्त हो,
हरि पद में अनुराग॥४॥
'भिक्षुयति' मति विमल हो,
सब का हो कल्याण।
पूर्ण भयो हरि चालीसा,
कृपा करें भगवान॥५॥